

अध्याय 5

पकौड़ी

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

खाली जगह में आवाजें लिखो।

उत्तर :

भोंपू



पो..पो..पो..

बस



पी... पी... पी...

सीटी



सशशशऽऽऽ

रोता हुआ बच्चा



ऊँ... ऊँ... ऊँ...

प्रश्न 2.

तुम्हें जो सवारी सबसे अच्छी लगती है, उसका चित्र बनाओ।

उत्तर :

विद्यार्थी स्वयं करें।

1 पहिया, 2 पहिये।
बोलो किसके कितने पहिये?



ट्रेलर	दो पहिये	ट्रक	छह पहिये
ताँगा	दो पहिये	बस	छह पहिये
स्कूटर	दो पहिये	रिक्शा	तीन पहिये
बैलगाड़ी	दो पहिये	कार	चार पहिये
साइकिल	दो पहिये	ऑटो रिक्शा	तीन पहिये
पानी का जहाज	पहिये नहीं होते	हवाई जहाज	नौ पहिये

दो अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 1: कविता 'पकौड़ी' के रचयिता कौन हैं?

उत्तर : 'पकौड़ी' की कविता के रचयिता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हैं।

प्रश्न 2: पकौड़ी को तेल में छाने पर कैसा आभास होता है?

उत्तर : पकौड़ी को तेल में छाने पर ऐसा आभास होता है कि वह तेल में छुन छुन करके नाच रही हो, और इससे रोचकता बढ़ती है।

प्रश्न 3: पकौड़ी को तेल में छाना जाता है, तो इसका कैसा अनुभव होता है?

उत्तर : पकौड़ी को तेल में छाना जाता है, तो ऐसा लगता है कि वह तेल में छुन छुन करके नाच रही है, जिससे रोचकता बढ़ती है।

प्रश्न 4: पकौड़ी की तलने के बाद उसे प्लेट में देखने पर कैसा आभास होता है?

उत्तर : पकौड़ी की तलने के बाद जब उसे प्लेट में देखा जाता है, तो उसे शर्मायी-सी लगती है।

प्रश्न 5: पकौड़ी कैसे पेट तक जा पहुँचती है?

उत्तर : दौड़ती हुई पकौड़ी हाथ से उछलकर सीधे पेट तक जा पहुँचती है।

प्रश्न 6: कवि के मन को पकौड़ी में कैसा आभास होता है?

उत्तर : कवि कहता है कि पकौड़ी उनके मन को खूब भाती है, इससे यह अनुभव होता है कि उन्हें पकौड़ी पसंद है।

चार अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 7: पकौड़ी को तेल में छाने पर कवि कैसा आभास करता है?

उत्तर : पकौड़ी को तेल में छाने पर कवि का आभास होता है कि वह तेल में छुन छुन करके नाच रही है, जिससे रोचकता बढ़ती है।

प्रश्न 8: पकौड़ी की तलने के बाद उसे प्लेट में देखने पर कवि कैसा आभास करता है?

उत्तर : पकौड़ी की तलने के बाद उसे प्लेट में देखने पर कवि का आभास होता है कि पकौड़ी शर्मायी-सी लग रही है।

प्रश्न 9: पकौड़ी कैसे पेट तक जा पहुँचती है और इसका क्या परिणाम होता है?

उत्तर : पकौड़ी दौड़ती हुई हाथ से उछलकर सीधे पेट तक जा पहुँचती है। इसका परिणाम है कि पेट में जाकर पकौड़ी घबरा-सी जाती है।

प्रश्न 10: कवि को पकौड़ी में कैसा आभास होता है और इससे कैसे व्यक्ति की भावनाओं को व्यक्त किया गया है?

उत्तर : कवि कहता है कि पकौड़ी उनके मन को खूब भाती है, इससे यह अनुभव होता है कि उन्हें पकौड़ी पसंद है और उसमें खास भावनाएँ हैं।

प्रश्न 11: पकौड़ी के तलने के दौरान जो आभास होता है, उसे कैसे कवि ने व्यक्त किया है?

उत्तर : पकौड़ी के तलने के दौरान कवि ने उसे ऐसा आभास कराया है कि वह तेल में छुन छुन करके नाच रही है, जिससे रोचकता बढ़ती है।

प्रश्न 12: पकौड़ी को प्लेट में देखने पर कवि कैसा भावनात्मक अनुभव करता है?

उत्तर : पकौड़ी को प्लेट में देखने पर कवि का भावनात्मक अनुभव है कि पकौड़ी शर्मायी-सी लग रही है, जिससे कवि को एक विशेष प्रकार का आनंद मिलता है।

प्रश्न 13: पकौड़ी को पेट तक जाने के बाद कैसा परिणाम होता है और इससे कवि कैसे जोड़ता है?

उत्तर : पकौड़ी को पेट तक जाने के बाद उसे घबरा-सी जाने का परिणाम होता है, और इससे कवि ने यह भावना जोड़ी है कि जैसे व्यक्ति का मन खुश होता है, वैसे ही पकौड़ी का भी एक विशेष भावना सामंजस्य होता है।

सात अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 14: कवि ने पकौड़ी के तलने के दौरान कैसा विवरण किया है और इससे कवि की भावनाएँ कैसे प्रकट होती हैं?

उत्तर : कवि ने पकौड़ी के तलने के दौरान उसका विवरण बड़े ही रोचक शब्दों में किया है। तेल में छानने से लेकर उसे मुँह में जाने तक का विवरण किया गया है, जिससे प्रकट होता है कि कवि किसी रोचक और मनोरंजक प्रक्रिया को भावनात्मक रूप से अनुभव कर रहा है।

प्रश्न 15: कवि कैसे व्यक्ति के मन को अनुपम भाती है जब पकौड़ी को पेट में जाने का वर्णन करता है?

उत्तर : कवि ने पकौड़ी को पेट में जाने का विवरण करते समय उसका मन कैसे घबरा-सा जाता है, यह विवरण करके व्यक्ति के मन को अनुपम रूप से भाती है। इससे प्रकट होता है कि पकौड़ी को खाने की प्रक्रिया में एक विशेष भावना होती है और व्यक्ति उसे अपनी भावनाओं से जोड़ता है।

प्रश्न 16: पकौड़ी की तलने और उसे प्लेट में देखने के बाद कवि का क्या अंदाज होता है और इससे कैसे भावनाएँ प्रकट होती हैं?

उत्तर : पकौड़ी की तलने और उसे प्लेट में देखने के बाद कवि को ऐसा अंदाज होता है कि पकौड़ी शर्मायी-सी लग रही है। इससे प्रकट होता है कि कवि पकौड़ी को उसके स्वाभाविक रूप में देखकर उसे व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर रहा है और उसकी भावनाएँ इस प्रक्रिया के माध्यम से प्रकट हो रही हैं।

कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता 'पकौड़ी' के रचयिता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हैं। इस कविता में कवि ने गरमा-गरम पकौड़ी के तलने से लेकर उसे मुँह में जाने तक का वर्णन बड़े ही रोचक शब्दों में किया है। जब पकौड़ी को तेल में छाना जाता है तो ऐसा लगता है कि वह तेल में छुन छुन करके नाच रही हो। तली पकौड़ी प्लेट में आने पर शर्मायी-सी लगती है। दौड़ती हुई पकौड़ी हाथ से उछलकर सीधे पेट तक जा पहुँचती है। कवि कहता है कि पेट में जाकर पकौड़ी घबरा-सी जाती है। कवि के मन को पकौड़ी खूब भाती है।

शब्दार्थ : शरमाना-लज्जा का अनुभव करना।

प्रसंग – प्रस्तुत पांक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक रिमझिम, भाग-1 में संकलित कविता 'पकौड़ी' से ली गई हैं। इस कविता के रचयिता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हैं। इसमें कवि ने गरमा-गरम पकौड़ी के लक्षणों का बखान किया है।

व्याख्या : कविता की इन पंक्तियों में कवि कहता है कि पकौड़ी दौड़ी-दौड़ी आती है तथा छुन छुन करके तेल में नाचने लगती है। जब पकौड़ी खाने के लिए प्लेट में आती है तो शरमा जाती है। कवि कहता है कि पकौड़ी दौड़ी-दौड़ी सी आती है।